आज जीवन में वेद के व्यावहारिक ज्ञान की उपयोगिता है - डॉ. अपर्णा धीर

वाईडर एसोसिएशन फॉर वैदिक स्टडीज (वेव्ज़्) ने सन्टेर फॉर इन्डोलोजी, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली के सहयोग से 21वाँ त्रिदिवसीय राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमें हरियाणा सरस्वती हेरिटेज डेवलपमेंट बोर्ड ने भी सहभागिता निभाई। यह सम्मेलन भारतीय विद्या भवन के दिल्ली केन्द्र में 10 से 12 दिसम्बर की तिथियों में आयोजित हुआ। वेव्ज़् सम्मेलन के विषय 'वैदिक ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष' पर विचार रखने के लिये लगभग 200 से अधिक भारतीय एवं 4 विदेशी विद्वानों ने भाग ग्रहण किया और सब ने यह निष्कर्ष निकाला की वैदिक ज्ञान ही सांसारिक जीवन के विविध विषयों को प्रतिपादित करता है। जीवन में उनका आचरण कर जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में प्रो. पी.एन. शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मुख्यातिथि थे। प्रो. भास्करनाथ भट्टाचार्य, निदेशक, वेद-विभाग, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकता: प्रो. मलिना ब्राटोवा, अध्यक्ष, कलास्किल ईस्ट विभाग, सोफिया विश्वविद्यालय, बलगरिया:, एवं प्रो. जी.सी. पन्त, अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, जामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली विशिष्ट अतिथि थे। प्रो. के.बी. सुबराययडू, प्राचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्रीरघुनाथ कीर्ति परिसर, उत्तराखण्ड मुख्यवक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। इस सत्र की अध्यक्षता भारतीय विद्या भवन के दिल्ली केन्द्र के अध्यक्ष श्री अशोक प्रधान ने की। सम्मेलन का उद्घाटन वेव्ज़्-भारत की अध्यक्षता प्रो. शशि तिवारी एवं सन्टेर फॉर इन्डोलोपी की डीन प्रो. शशि बाला की उपस्थिति में हुआ। वेव्ज़् के शैक्षणिक सचिव डॉ. रणजित बेहेरा ने इस सत्र का संचालन करते हुए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया।

जिन विशेष विद्वानों ने भाग लिया, उनके नाम इस प्रकार है- अमेरिका से श्रीमति कमलेश कपूर तथा श्री नीलेश नीलकण्ड ओक, बैंगलोर से डॉ. भक्ति निष्काम शान्ता, डॉ. भक्ति निष्काम मुनि, जोधपुर से प्रो. राम गोपाल, हरिद्वार से प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री, डॉ. प्रतिभा शुक्ला, दिल्ली से डॉ. आर.एस. कौशल, प्रो. रमेश भारद्वाज, डॉ. मदन मोहन बजाज, डॉ, गणेश दत्त शर्मा, डॉ. सरोज गुलाटी, प्रो. सुधीर कुमार, डॉ. उर्मिल रुस्तगी, श्री वाई.के. वाधवा, प्रो. आर.पी. सिंह, डॉ. प्रवेश सक्सेना, डॉ. ईश नारङ्ग, फरीदाबाद से डॉ. ललिता कुमारी जनुजा, डॉ. दिव्या त्रिपाठी, अजमेर से डॉ. अनिता खुराना, बरेली से डॉ. श्वेतकेतु शर्मा आदि। इसके अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, गोवाहाटी विश्वविद्यालय, अलिगढ़ विश्वविद्यालय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इत्यादि से 100 से अधिक युवा-विद्वानों की प्रतिभागिता रही।

वेद के व्यावहारिक पक्ष को दार्शनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, धर्मशास्त्रीय, खगोलीय जैसे कई विषयों के आधार पर सिद्ध करने के प्रयास से सम्मेलन में कुल 18 सत्रों में मुख्य व्याख्यान, स्काईप प्रस्तुतीकरण, समानन्तर सत्रों एवं युवाओं के लिए आयोजित विशेष सत्र में प्रतिभागियों ने अपने विचारों को व्यक्त किया। प्रत्येक सत्र में संस्कृत, हिन्दी और आङ्गल भाषाओं में शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये। प्रश्नोत्तर द्वारा पत्र-वाचकों के साथ संवाद इस सम्मेलन की विशेषता रही। वेदमंत्रों को व्यावहारिक जीवन में चरितार्थ करते हुए जीवन की संपूर्ण कर्कशता मिटाकर अपने घर, समाज और राष्ट्र में सहृदयता एवं सौमनस्य का साम्राज्य स्थापित करना और सदैव सबको साथ लेकर उन्नति करना ही वैदिक ज्ञान की व्यावहारिकता है। सम्पूर्ण विश्व को एक मानते हुए यही संदेश दिया गया है। मानव जीवन रथ के दो चक्र हैं - पहला है भौतिक उन्नति और दूसरा है आध्यात्मिक उन्नति। ऋषियों ने मानव के जीवन को सत्य, सुंदर बनाने हेतु आदेश दिया कि इन भोगों को त्यागपूर्वक भोगों। वैदिक विद्या यद्यपि अध्यात्म की अन्यतम निधि है परंतु जीवपशुत्व से मनुष्यत्व, ऋषित्व, देवत्व और ब्रह्मत्व की प्राप्ति कैसे कर सकता है यही इस विद्या का व्यावहारिक पक्ष है। 'वैदिक सरस्वती' पर चर्चा हेतु एक विशेष सत्र की व्यवस्था भी सम्मेलन के प्रथम दिवस पर की गई, जिसमें हरियाणा राज्य के शिक्षा, पुरातत्व, पर्यटन एवं संग्रहालय के माननीय मंत्री श्री राम बिलास शर्मा अन्य प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वानों के साथ उपस्थित हुए।

इस अवसर पर सांस्कृतिक गतिविधियों के अन्तर्गत दिनांक 10 दिसम्बर को डॉ. सुप्रिया संजू एवं उनकी मण्डलों द्वारा 'कथक-यात्रा' मंदिर और मंच' का प्रस्तुतीकरण किया गया और दिनांक 11 दिसम्बर को डॉ. ऋषिराज पाठक के नेतृत्व में उनके सहयोगियों ने 'श्रुति-सन्ध्या' में वेदपाठ किया।

समापन सत्र का प्रारम्भ वेव्ज़् के कुलगीत के लोकार्पण से हुआ। डॉ. प्रवेश सक्सेना और डॉ. शशि तिवारी द्वारा लिखित वेव्ज़्-कुलगीत पटना से आई डॉ. रीना सहाय और उनके विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में सम्मेलन की आयोजन समिति के अतिरिक्त मुख्यतिथि प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली थे। सारस्वतातिथि श्री रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन, दिल्ली थे। प्रो. विकटोरीया डीमोनोव, सांस्कृतिक और कला का इतिहास विभाग, उरल विश्वविद्यालय, रूस, डॉ. पी.वी. जोशी, पूर्व राजदूत एवं प्रो. शारदा शर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली विशिष्ट अतिथि थे। प्रो. शशि प्रभा कुमार, संस्थापक सांची विश्वविद्यालय, म.प्र. ने समापन वक्तव्य दिया।

इस अवसर पर वेव्ज़ भारत के छठें और सातवें प्रकाशन का भी लोकार्पण हुआ। ये दोनों ग्रन्था क्रमश: प्रो. भूदेव शर्मा और प्रो. लल्लन प्रसाद के अभिनन्दन ग्रन्थ के रूप में वेव्ज़् द्वारा प्रकाशित किये गये हैं। इसी सत्र में 8 युवा विद्वानों को उत्तम पत्र-वाचन के लिए पुरस्कृत भी किया गया। समापन सत्र का संचालन वेव्ज़् की प्रशासनिक सचिव डॉ. अपर्णा धीर द्वारा किया गया।

अन्य में प्रो. शशि तिवारी ने सम्मेलन के सभी आयोजकों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्मेलन का समापन संस्कृत के ख्याति प्राप्त भारतीय विद्वानों की उपस्थिति में शन्ति-पाठ और राष्ट्रगान से हुआ।